ISSN 2321-1288

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS

RAJHISCO

PROCEEDING VOLUME XXX

DEPARTMENT OF HISTORY,
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY
UDAIPUR

DECEMBER - 2015

Editorial Board takes no responsibility for inaccurate misleading data, opinion and statement appeared in the articles published in this Proceeding. It is the sole responsibility of the contributors. No part of this Proceeding can be reproduced without the written permission of the Secretary, who also holds the copyright © of the 'Proceeding Rajasthan History Congress'.

Published by :
Prof. S.P. Vyas
Secretary, Rajasthan History Congress
Department of History
J.N.V. University, Jodhpur

To be had from :
Dr. Manorama Upadhayaya
Hony. Treasurer, Rajasthan History Congress
Mahila PG Mahavidyalaya, Jodhpur

ISSN 2321-1288

Price :
Rs. 250/- only

Printed at :
Jangid Computers, Jodhpur

अनुक्रमणिका

1.	Presidential Address - Professor Ram Chander Thakran	...	1
2.	Professor G.N. Sharma Memorial Lecture - Dr. Anju Suri	...	35
3.	प्रोफेसर आर.पी. व्यास स्मृति व्याख्यान प्रो. शिव कुमार भनोत	...	49
4.	**Prof. Pemaram Prize Paper in Udaipur Session 2015** Peasant Unrest and its Repression in Nagaur, Dabra Tragedy, 13 March 1947 - Rajesh Kumar	...	70
5.	**Gajanand Chaudhary Prize Paper in Udaipur session 2015** Dynamics of Camel Management in Desert : A Study Based on Archival Sources of Bikaner State - Nitin Goyal	...	76
6.	Historic new dimensions of the Military triumphs of the Imperial Pratihara ruler Vatsaraja - Shanta Rani Sharma	...	86
7.	Impact of Jainism on Rulers of Chauhan Dynasty during 12th Century CE A Brief Introduction - Dr. Mamta Yadav	...	90
8.	History Inscribed : A Study of Chauhan Inscriptions from Haryana - Dr. Jagdish Parshad	...	95
9.	The War Strategy of Maharana Pratap - Dr. (Mrs.) Digvijay Bhatnagar	...	106
10.	Akbar and the Rajputs - Dr. Tanushree Verma	...	116
11.	Intotoxicants as Symbol of Power and Authority during the Mughal Period, with Special Reference to the Rajputs - Salma Alam	...	125
12.	Medieval Monuments of *Qasba* Nagaur as a symbol of Socio-Religious and Cultugal History : An Epigraphic Study - Dr. Jibraeil	...	131

4. कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की पुनर्समीक्षा की आवश्यकता ... 547
- विक्रमसिंह अमरावत

5. मेवाड़-राज्य के सामाजिक-आर्थिक पहलू का स्रोत 'देवलोक पधारिया की बहियां (कानोड़ ठिकाना के संदर्भ में) ... 551
- डॉ. जे.के. ओझा

6. सूरजकंवर ब्याव री बही - विशेष संदर्भ (वैवाहिक रीतियाँ और दहेज का ब्यौरा) ... 558
- डॉ. अल्पना दुभाषे

7. खाना रिकॉर्डस् में क्षेत्रीय इतिहास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ... 562
- डॉ. अनिल पुरोहित

8. राजस्थान में 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम - आउवा (मारवाड़) के विशेष संदर्भ में ... 569
- कनिका भनोत

9. राजस्थान की जन-जागृति में आरंभिक पत्र-पत्रिकाओं का योगदान (1849-1920 ई. तक की पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ में) ... 580
- डॉ. सुरेश कुमार

0. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम में पत्र-पत्रिकाओं का प्रभाव (1920 ई. में 1947 ई. तक) ... 585
- डॉ. दिनेश राठी

1. राजस्थान में स्वाधीनता आन्दोलन : अजमेर मेरवाड़ा के मुस्लिम स्वत्रन्ता सेनानियों के विशेष संदर्भ में ... 592
- डॉ. इकबाल फातिमा

2. स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान शेखावाटी क्षेत्र में जन-जागृति में महिलाओं की भूमिका ... 599
- नरेन्द्र कुमार सैनी

3. गोवा मुक्ति संग्राम में झालावाड़ के सत्याग्रही : श्री छोटेलाल वर्मा ... 604
- डॉ. अर्चना द्विवेदी

4. प्रथम विश्वयुद्ध में मेवाड़ का योगदान ... 609
- डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित

5. जैसलमेर राज्य में परम्परागत चिकित्सा सुविधा : एक अध्ययन (1818-1900 ई.) ... 613
- डॉ. एम.आर. गढवीर

6. बीकानेर रियासत और औद्योगिक एवं व्यापारिक वर्ग ... 621
- डॉ. महेन्द्र पुरोहित

7. राजस्थान की बैंकिंग व्यवस्था में उभरती नवीन प्रवृत्तियाँ (18वीं से 19वीं शताब्दी तक) ... 625
- डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान शेखावाटी क्षेत्र में जन-जागृति में महिलाओं की भूमिका।

नरेन्द्र कुमार सैनी

शेखावाटी की महिलायें अपने शौर्य, त्याग और बलिदान के लिए सदैव ह अग्रणी रही है। जहाँ यहाँ की महिलाओं ने पुरुषों से कंधे से कँधा मिलाकर खेत खलिहान और कारखानों में काम किया है वहीं इन्होंने आन्दोलनों में अत्याचारों के खिलाफ पुरुषों के साथ-साथ संघर्ष किया तथा जेल गयी है। शेखावाटी की आम गलियों में जाग्रति का अंकुरण सन् 1925 से प्रस्फुटित हुआ जब उन्हें शिक्षा की ओर आकृष्ट किया गया।

सन् 1932 जाट महासभा, झुन्झुनू में हजारों महिलायें सम्मिलित हुई थी जिन्होंने विद्यार्थी भवन बनाने के लिए पन्नेसिंह देवरोड़ के आह्वान पर सभा स्थल में अपने गहने उतार दिये थे तथा बाद में सीकर में प्रजापति महायज्ञ में 1934 ई. में बड़ी संख्या में भाग लिया। उस समय अनेक महिला कार्यकर्त्ता मैदान में आ चुकी थी। श्रीमती उत्तमा देवी के नेतृत्व में एक सशक्त महिला संगठन बन चुका था। जो पुरुषों की भाँति समाज सुधार और आवश्यकता पड़ने पर अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करने को तैयार थी। प्रत्येक गांव में शेखावाटी के अग्रिम पंक्ति के नेताओं की धर्म पत्नियां स्थानीय नेतृत्व करने लगी। उन्होंने रुढ़िग्रस्त संस्कारों को तिलांजलि देकर आर्य संस्कारों को स्वयं ग्रहण किया और समाज में उनका पूरा प्रचार किया। परम्परागत लोक गीतों की जगह नये लोक गीतों को अपनाया।

संभ्रात और जागरूक महिलाओं में विशेष रूप से दुर्गादेवी, उत्तमादेवी, रामेश्वरी देवी शर्मा (श्रीमाधोपुर), रमा देवी (सीकर), किशोरी देवी पत्नी सरदार हरलाल सिंह फूलां देवी (मांडासी), अनुसूया देवी (बग्गड़), विमला देवी (चिड़ावा), सिणगारी देवी (परतापपुरा), म्होरी देवी (पातुसरी), गौरां देवी (हनुमानपुरा), किशोरी देवी पत्नी ख्यालीराम (झामरवासी), रामप्यारी देवी, अंजना देवी और अनुसुया बहिन जी (अध्यापिकाएं) आदि प्रमुख थीं। जिन्होंने महिलाओं को संगठित किया और पुरुषों की भांति किसी भी संघर्ष का मुकाबला करने को प्रेरित करती रहती थी। इनके एक आह्वान पर हजारों महिलायें एकत्रित हो जाया करती थी इन्होंने गांव-गांव और घर-घर जाकर स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्जवलित की तथा नारी शिक्षा तथा प्रत्येक कार्य में भागीदारी का पाठ पढ़ाया चाहे इनमें से कुछ एक महिलायें अनपढ़ रही हो फिर भी इन्होंने महिलाओं के

 ISSN 2321-1288

संगठित करने का कार्य किया।

सिहोट के ठाकुर मानसिंह के अत्याचार के खिलाफ शेखावाटी की महिलाओं ने एक वृहद् महिला सम्मेलन कटराथल (सीकर) 24 अप्रेल 1934 को आयोजित किया। सम्मेलन की संयोजिका उत्तमा देवी थी। जब महिला सम्मेलन की घोषणा हो चुकी थी तो सीकर ठिकाने ने सम्मेलन नहीं होने देने के अनेक उपाय किये। गांव से महिलाओं की निकासी पर रोक और धमकियां दी गई। कटराथल में दफा 144 लागू कर दी गई और घोषणा की गई कि यदि कोई महिला या पुरुष भाग लेगा तो उसे गिरफ्तार कर लिया जायेगा। शेखावाटी के कोने-कोने से महिलाओं के जत्थे कटराथल पहुंचने लगे। इस सम्मेलन में लगभग 5000 महिलाओं ने भाग लिया। शेखावाटी में महिलाओं का यह प्रथम वृहद् सम्मेलन था जिसकी अध्यक्षता किशोरी देवी ने की। महिलाओं के जत्थों का नेतृत्व जिन वीर महिलाओं ने किया उनमें दुर्गावती शर्मा (पचेरी बड़ी), फूलां देवी (मांडासी), किशोरी देवी (भामरवास), रमादेवी (मूंडवा) आदि प्रमुख थी। कूदन, कोलिड़ा, पालड़ी, पलथाना, बीबीपुर, सोतिया बास आदि अनेक गांवों से महिलाओं के जत्थे सम्मेलन में शामिल हुये। शेखावाटी इस महिला सभा में इतना आक्रोश था कि वे किसी भी प्रकार के अत्याचार का सामना करने के तैयार थी। उत्तमा देवी के जोशिले भाषण ने उनमें और जान फूंक दी। सम्मेलन में तय किया कि स्त्रियों को अपमानित करने वालों को कतई माफ नहीं किया जायेगा। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक ठिकानेदारों को ठिकाने नहीं लगा देंगी, वे चैन से नहीं बैठेंगी।

1935 ईसवी में जयसिंहपुरा में डूंडलोद ठाकुर के छोटे भाई ईश्वर सिंह द्वारा गोलीकाण्ड में चौ. टीकूराम की मृत्यु तथा महिलाओं पर गोलियों की बौछार को लेकर स्थान-स्थान पर महिलाओं ने सभायें की। पातूसरी गांव में बनारसी देवी की अध्यक्षता में बड़ी सभा हुई। जिसमें आस-पास की हजारों महिलाओं ने भाग लिया।

महिलाओं के उत्थान को तीव्र गति प्रदान करने हेतु विद्यार्थी भवन, झुन्झुनूं में एक वृहद महिला सम्मेलन 11 मार्च 1938 ई. को बुलाया गया। जिसमें शेखावाटी के दूर-दराज के इलाकों से हजारों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन की विशेषता यह थी कि माँ बेटी और पुत्रवधु तीनों ने भाग लिया इन किसान महिलाओं में जागृति का संदेश फूंककर शिक्षा की ओर प्रेरित करना तथा अपने आप को पुरुषों से हीन न समझने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से यह सम्मेलन बुलाया गया। स्वागत भाषण में कुमारी शीतल बाई ने कहा-'पहला कर्त्तव्य हमारा यही है कि हम शिक्षित बने और अपनी बालिकाओं को शिक्षित बनाये। बगैर शिक्षित हुए हमारी हालत हरगिज नहीं सुधर सकती। मैं बल पूर्वक कहती हूँ कि जब तक देश या समाज की स्त्री जाति शिक्षित नहीं होगी तब तक कोई देश या समाज उन्नत नहीं हो सकता और न ही हुआ है। जिस देश की मातृ शक्ति कमजोर हो जाती है उस राष्ट्र का पुरुष सम[illegible]भी कमजोर रहता

है।" इस सम्मेलन से महिलाओं में बड़ी जागृति आयी और बहुत सी महिलाओं ने सभा स्थल पर ही घूंघट प्रथा छोड़ दी।

झुन्झुनूं महिला सम्मेलन के बाद इस क्षेत्र से 11 छात्राओं को 1938 ई. में वनस्थली विद्यापीठ में अध्ययन के लिए भेजा गया जिन्होंने शिक्षा उपरान्त समाज को एक नई दिशा ही नहीं दी बल्कि सुदृढ़ नेतृत्व भी प्रदान किया और आज भी कर रही हैं। उन प्रतिभाशाली छात्राओं में थी-सुमित्रा कुमारी, मनोरमा कुमारी, कमला कुमारी, देवी सुमिरा, सुधा, कुमारी सुभिरा, कुमारी सरस्वती, कुमारी शांति, पार्वती कुमारी आदि थी। इनमें से आगे चलकर सुमित्रा सिंह और श्रीमती कमला ने राजस्थान के मंत्रीमंडल में शामिल होकर समाज एवं राज्य का सफल सुदृढ़ नेतृत्व किया और अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ी।

जयपुर प्रजामण्डल का सत्याग्रह 1939 ई. में शेखावाटी की महिलाओं का त्याग और बलिदान भारतीय इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। 15 मार्च 1939 ई. को सरदार हरलाल सिंह की गिरफ्तारी के दिन जिस नृशंसता से जयपुर राज्य की पुलिस ने सत्याग्रहियों पर लाठीयां बरसाई और घोड़े दौड़ाये, वह बर्बर अत्याचार की क्रूर कहानी है। उसमें महिलाओं के जत्थों ने पुलिस के अत्याचारों को सहन किया। जयपुर के जौहरी बाजार में महिलाओं के जत्थे लेकर गिरफ्तारियाँ देने पहुँची। दुर्गादेवी शर्मा के नेतृत्व में प्रथम जत्था 18 मार्च 1939 को पहुँचा। पुलिस हैरान हो गयी परन्तु दुर्गादेवी, फूलादेवी और उनकी पुत्रवधु रामकौरी देवी जिसकी गोद में 6 माह का बालक था, किशोरी देवी जिसका गोद में 7 माह बालिका थी, गोरां देवी, सिणगारी देवी, म्होरी देवी, रामेश्वरी देवी, रमा देवी आदि ने गिरफ्तारी दी और 4 माह तक केंद्रीय कारागृह जयपुर जेल में रही। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक महिलाओं ने गिरफ्तारी दी जिन्हें 3 से 6 माह तक की सजा दी गई। दूसरे जत्थे में लगभग 50 महिलायें थी, जो श्रीमती किशोरी देवी के नेतृत्व में गयी थी, परन्तु समझौता होने के कारण इन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया। जयपुर सत्याग्रह शेखावाटी का महिलाओं की गिरफ्तारी के कारण सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गया था। यदि यह सत्याग्रह 19 मार्च 1939 को समाप्त नहीं होता और गिरफ्तारियों का सिलसिला जारी रहता तो हजारों महिलायें जेल जाने को तैयार थी।

सीकर की रमादेवी 10-11 वर्ष की उम्र विधवा हो गई। इसके उपरान्त पढ़ना प्रारंभ किया और पूरी शिक्षा ग्रहण करने के बाद सीकर में अध्यापिका बन गयी। कालान्तर में राजस्थान सेवा संघ में भी कार्य करने लगी। रमादेवी एवं अंजना चौधरी (नीम का थाना) बिजौलिया सत्याग्रह में भी सम्मिलित हुई। अंजना देवी चौधरी प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण चौधरी की पत्नी थी। वहाँ पर वे दोनों विजय सिंह पथिक के सम्पर्क में भी आयी। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अंजना देवी ने अजमेर से नीम का थाना समाचार पत्र पचनाएं, पोस्टर्स आदि लाकर लोगों में बांटती तथा उन्हें राष्ट्रीय

आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करती। ब्रिटिश भारत में यह कार्य देशद्रोह का अपराध माना जाता था जिसे अंजना देवी चौधरी ने किया। कई बार उनकी तलाशी ली गई सामग्री जब्त की गई तथा जेल भी जाना पड़ा। बिजोलिया में भी आन्दोलन का नेतृत्व किया जिस कारण जेल की यात्राएं करनी पड़ी।

प्रजामण्डल का वार्षिक उत्सव झुन्झुनू में 4 अप्रैल 1941 को हुआ था उसमें वनस्थली की छात्राओं ने बाजार में जुलुस निकाला। इस इलाके में छात्राओं द्वारा निकाला गया वह प्रथम जुलुस था जिसे लोगों ने बड़े कौतुहल से देखा और उससे शिक्षा ग्रहण की। श्रीमती सुभद्रा जोशी की अध्यक्षता में झुन्झुनूं में एक महिला सम्मेलन हुआ जिसमें देहात की हजारों की महिलायें आयी थीं। नवलगढ़ के सेठ सीताराम की पत्नी ने इस सम्मेलन में ओजस्वी भाषण दिया और उसमें पर्दा प्रथा छोड़ने, खादी धारण करने, गहनों का त्याग करना और शिक्षा पर बल दिया। तत्पाश्चात् नारी शिक्षा शेखावाटी में निरन्तर बढ़ती चली गई।

जब जब देश में राष्ट्रीय आन्दोलन हुये शेखावाटी की महिलायें उनमें अग्रिम पंक्ति में खड़ी हुई। असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन से लेकर हैदराबाद किसान सत्याग्रह तक में गयी। कलकत्ता और बम्बई जैसे विशाल नगरों में शेखावाटी के प्रवासी लोगों की स्त्रियों ने भाग लिया। अनुसूया देवी, ज्यानकी देवी, रमा देवी जोशी, रामेश्वरी देवी, अंजना देवी ने बिजोलिया किसान आन्दोलन में नेतृत्व किया और उनमें राष्ट्रीयता की भावना को कूट-कूट कर भर दिया। नेतृत्व शक्ति मे शेखावाटी की महिलाओं का मुकाबला नहीं, इन्होंने आर्य समाज की शिक्षाओं को घर-घर तक पहुंचाने की जिम्मेदारी ली।

रामेश्वरी देवी श्रीमाधोपुर की एकमात्र महिला जिसने स्त्री और पुरुष दोनों का नेतृत्व किया जयपुर रियासत की श्रीमाधोपुर नगरपालिका में चुनी हुई अकेली महिला थी, जिसने अन्य महिलाओं के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में निर्भय होकर कार्य करने का मार्ग प्रशस्त किया। जयपुर सत्याग्रह में भी रामेश्वरी देवी, किशोरी देवी, दुर्गा देवी ने महिलाओं का नेतृत्व किया तथा चार-चार माह के कारावास की सजा काटी अंजना देवी एवं रमा देवी ने 1931 ईसवी में बिजोलिया किसान आंदोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया श्रीमती रामप्यारी कुमावास ने अन्य सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद सत्याग्रह में शामिल हुई ।

यहाँ के राष्ट्रीय आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका पुरुषों से कम नहीं रही। जिस साहस, हिम्मत और दृढ़ निश्चय से आन्दोलनों में भाग लिया इतिहास में उसका कोई सानी नहीं हैं। निर्भीक, दृढ़ और स्पष्टवादिता के गुणों से दीक्षित शेखावाटी की माँ, बहु-बेटियों ने जो नेतृत्व किया वह अपने आप में एक मिशाल है।

संदर्भ

1. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी का इतिहास, कुटीर प्रकाशन, मंडावा, झुन्झुनूं, 1998
2. मिश्र, रतनलाल, शेखावाटी के स्वतंत्रता सेनानी, कुटीर प्रकाशन, मंडावा, झुन्झुनूं
3. आर्य, डॉ. हरफूल सिंह, शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन जयपुर 2013
4. सिंह, मोहान, शेखावाटी में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, रविन्द्र प्रकाशन, झुंझुनूं
5. शेखावत, रघुनाथ सिंह, शेखावाटी प्रदेश का राजनीतिक इतिहास, ठाकुर मल्लूसिंह स्मृ ग्रंथागार काली पहाड़ी, झुन्झुनूं 1998
6. मेहर, जहूर खाँ एवं गहलोत, सुखवीर सिंह, राजस्थान स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, ४ जगदीश सिंह गहलोत शोध संस्थान, जोधपुर 1992
7. शर्मा, पंडित झाबरमल, सीकर का इतिहास, राजस्थान एजेंसी, बड़ा बाजार, कलकत्ता